प्राक्कथन

स्नातकोत्तर पढ़ाई के दरम्यान मुझे मोहन राकेश के 'आधे-अधूरे' और प्रसाद जी के 'चंद्रगुप्त' जैसे नाटकों ने अत्यधिक प्रभावित किया। स्नातकोत्तर पढ़ाई का प्रथम वर्ष पूरा होने के बाद द्वितीय वर्ष से मैं 'सेट' परीक्षा की तैयारी में जुटा तबसे मैं विश्वविद्यालय के नियतकालीक विभाग (Periodical Section) में हिंदी की मासिक पत्रिकाएँ पढ़ने लगा। इनमें 'भाषा', 'आलोचना', 'गगनांचल', 'हंस', 'समीक्षा', 'नया ज्ञानोदय' प्रमुख थी। नया ज्ञानोदय पत्रिका के संपादक और वरीष्ठ समीक्षक प्रभाकर श्रोत्रिय जी के संपादकीय लेखों से मैं काफी प्रभावित हुआ। मुझे नाटक साहित्य में दिलचस्पी थी ही। अतः उनके नाटक साहित्य को लेकर मैंने काशीद जी से चर्चा की, पत्रिकाओं में उनके नाटकों से संबंधित प्रकाशित लेख पढ़े। श्रोत्रिय जी ने कुल तीन नाटक लिखे हैं - 'इला', 'साँच कहूँ तो' और 'फिर से जहाँपनाह' इन तीनों नाटकों की समीक्षाएँ भी पढ़ी। उसके पश्चात् मैंने श्रोत्रिय जी के नाटकों पर ही एम्. फिल्. करना निश्चित किया।

लघु शोध-प्रबंध के आधार ग्रंथ प्राप्त करने हेतु मैंने श्रोत्रिय जी से दूरभाष पर संपर्क किया। प्रकाशकों से पत्राचार करके मैंने आधार ग्रंथ प्राप्त किए। इसके पश्चात् श्रोत्रिय जी से पत्राचार जारी रहा। जिसका तुरंतं उत्तर मुझे मिला। इन दिनों मेरी 'सेट' परीक्षा की तैयारी भी चल रही थी। इसी कारण मैं लगभग साल भर एम्. फिल्. की तरफ ध्यान नहीं दे सका। 29 जनवरी, 2006 में संपन्न हुई 'सेट' परीक्षा में ढाई साल की मेहनत की बदौलत मैं उत्तीर्ण हुआ।

लघु शोध-प्रबंध का लेखन करते समय मुझे कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा। फिर भी परमात्मा पर दृढ़ विश्वास एवं दृढ़संकल्प के साथ मैं कार्यरत रहा और शोध-कार्य पूरी लगन एवं श्रद्धा के साथ पूरा किया।

अनुसंधान के प्रारंभ में ही श्रोत्रिय जी के नाटकों को लेकर मेरे मन में निम्नांकित प्रश्न उपस्थित हुए थें -

1. प्रभाकर श्रोत्रिय जी का व्यक्तित्व कैसा है ?
2. किन विषयों को लेकर उन्होने नाटक लिखे हैं ?

3. उनका कवि और समीक्षक व्यक्तित्व नाटकों में झलकता है या नहीं ?
4. उनके नाटक मंचन की दृष्टिसे कितने सफल हैं ?
5. नाटककार के रूप में वे कितने सफल हुए ?

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने लघु शोध-प्रबंध का चार अध्याय में तथा उपसंहार में विभाजन किया है -

✷ अध्याय विभाजन

✷ प्रथम अध्याय - 'प्रभाकर श्रोत्रिय : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'

इस अध्याय में श्रोत्रिय जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया है। व्यक्तित्व में जन्म, बचपन, शिक्षा, विवाह आदि बातों का जिक्र है तो कृतित्व में कवि के रूप में, आलोचक के रूप में, नाटककार के रूप में चित्रण किया है।

✷ द्वितीय अध्याय - 'प्रभाकर श्रोत्रिय के नाटकों का कथ्य'

इस अध्याय में उनके नाटकों के कथ्य का विवरण किया है। सबसे पहले कथावस्तु बताई गई है फिर तीनों नाटकों की कथावस्तु की समीक्षा अर्थात् नाटककार ने जिन समस्याओं का चित्रण नाटक में किया है उनका विस्तार से चित्रण किया है।

✷ तृतीय अध्याय - 'प्रभाकर श्रोत्रिय के नाटकों में मंचीयता'

इस अध्याय में प्रभाकर श्रोत्रिय जी के नाटकों की 'मंचीयता' का विवरण प्रस्तुत है। इसमें मंच-सज्जा, दृश्य-सज्जा, वेशभूषा एवं रूपसज्जा, अभिनेयता, प्रकाश-योजना, ध्वनि एवं संगीत योजना मंचीयता के इन अंगों का विस्तृत विवरण किया है।

✷ चतुर्थ अध्याय - 'प्रभाकर श्रोत्रिय के नाटकों का शिल्प'

यह अध्याय महत्त्वपूर्ण है। इसमें नाटकों की शिल्प विधि का चित्रण किया गया है। इसमें कथावस्तु, पात्र-चरित्र चित्रण, संवाद या कथोपकथन, देशकाल वातावरण, भाषा शैली और उद्देश्य का चित्रण किया है।

✷ उपसंहार

सामग्री संकलन, अध्ययन, मनन, विवेचन, विश्लेषण के उपरांत प्राप्त निष्कर्षों को संक्षेप में दर्ज किया है। तथा प्राप्त उपलब्धियों को प्रस्तुत किया है।

✷ संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

समीक्षा ग्रंथ

पत्र-पत्रिकाएँ

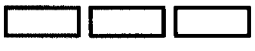

ऋणनिर्देश

मेरे इस लघु शोध-प्रबंध का लेखन पूरा करते समय अनेक व्यक्तियों का सहकार्य मुझे प्राप्त हुआ, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

मेरे श्रद्धेय गुरूवर्य प्रो. (डॉ.) पांडुरंग पाटील जी के स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन में मैंने यह शोध-कार्य पूरा किया। उनके मार्गदर्शन के बिना यह लघु शोध-प्रबंध पूरा कर पाना लगभग असंभव था। अतः उनके और उनके परीवार के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

डॉ. अशोक बाचुळकर और डॉ. गिरीष काशीद इन दो सुहृदयों की स्नेहपूर्ण छाया में मेरा व्यक्तित्व उभरा है। बी.ए. से लेकर आज तक वे मुझे मार्गदर्शन करते रहे हैं। इन्हीं की प्रेरणा के फलस्वरूप मैं 'सेट' जैसी परीक्षा उत्तीर्ण हो सका। एम्. फिल्. के लिए भी इन्होंने मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन किया है। अतः पूरे जीवनभर मैं इनके ऋण से मुक्त नहीं हो सकता। डॉ. साताप्पा चव्हाण ने समय-समय पर मार्गदर्शन किया है। उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा कर्तव्य बनता है।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में कार्यरत प्रपाठक डॉ. पद्मा पाटील जी ने मुझे प्रभाकर श्रोत्रिय के नाटकों को लेकर महत्त्वपूर्ण जानकारी दी तथा उनकी समीक्षा पद्धति को लेकर मेरे साथ चर्चा भी की। अपने अनमोल समय में से समय निकालकर उन्होंने मुझे मार्गदर्शन किया अतः उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. अर्जुन चव्हाण के प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

पहली कक्षा से लेकर आज तक मेरी शिक्षा के लिए अपनी जरूरतों को मन में ही दबाती रही मेरी माँ हमेशा कर्म को ही देवता मानती रही है। मेरे लिए हमेशा चिंतित रहनेवाली मेरी माँ और मेरे पिताजी जो बचपन से मुझे शिक्षक बनाने के

प्रयास में अनेक समस्याओं का सामना करते रहे हैं। मेरी शिक्षा के लिए हमेशा आग्रही रहे हैं। अपने माँ-बाप के प्रति महज कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरी कृतघ्नता होगी। मेरे अध्यापक छोटे भाई संभाजी और(सौ. स्वाती)दोनों का जो सहयोग मुझे प्राप्त हुआ अतः मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ। मेरे चाचा श्री शहाजी चौगले और भिवाजी चौगले जो हमेशा मेरी मदद करते रहे हैं उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मेरे मित्रों में कृष्णात कांबळे, संतोष बराले, नारायण पाटील, सागर बंगे, पद्माकर वानखेडे, अमोल चांदेकर, पवन चांदेकर, सदानंद आग्रे, अतुल पाटोळे, बाळकृष्ण पाटील, प्रदीप कांबळे, सर्जेराव कांबळे, शौकत आतार, गजानन चव्हाण, प्रकाश कांबळे, उदय तेली, शरद पवार, निलेश जाधव, संदीप पाटील, अजित शिंदे, सुरेश बंके, संजय गावडे, अनिल परीट, दीपक खांडेकर, मेरे भाई कृष्णात चौगले, सुरेश चौगले, संदीप चौगले, माधुरी कांबळे, रूपाली जंगम, ज्योती पाटील, प्राजक्ता जाधव, सारीका पाटील आदि लोगों ने जो महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया उनके प्रति मैं दिल से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। इसके साथ ही जिन ज्ञात-अज्ञात लोगों की सहायता मुझे मिली उनके प्रति भी मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

ग्रंथालय के सभी कर्मचारी जिन्होंने मुझे समय-समय पर किताबें उपलब्ध कराई उनके और टंकलेखक श्री. विनायक पाटील के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

श्री चौगले

स्थान - कोल्हापुर

तिथि - 23 APR 2007

श्री. हंबीरराव मारूती चौगले